चारुदत्तकथा भाषाया:

छगनलाल ...
नं ५९ ८२
श्री १००८ ... तीर्थंकर
बारामती, जि. पुणे.
दिगंबर जैन मंदिर.

॥ अथ चारुदत्तकथा लिख्यते ॥ भाष्य गुजराथि ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः श्रीगुरुभ्योनमः ॥ अथचा
रुदत्तकथा लिख्यते ॥ ॐनमः सिद्धेभ्यः ॥ दोहा ॥ सकलसिद्धिकरतास
दा ॥ पूजित इंद्रनरेंद्र ॥ पंचज्ञानकर सोभता ॥ प्रणमु वीरजीनेंद्र ॥ १ ॥
तिनभवननायकप्रभु ॥ मिथ्यामततमसूर ॥ कर्मअरिजियासवे ॥ मो
हकरचकसूर ॥ २ ॥ गुणसागरसमपूरयो ॥ कोइन पामेपार ॥ धर्माधर्म
प्रकाशयो ॥ प्रणमु वारंवार ॥ ३ ॥ जिनवाणीवंदो सदा ॥ ज्ञानदीपकप्रका
स ॥ कविजनकीमातासही ॥ विघ्नतनु करोनाश ॥ ४ ॥ शलगुरुप्रण
मुभावसु ॥ ज्ञानतनादातार ॥ स्वर्गमुक्तिपंथदर्शता ॥ भव्यजीवआधार
॥ ५ ॥ चोपाई ॥ देवशास्त्रगुरु प्रणमीये ॥ मन उलट भई सुखदा
य ॥ चारुदत्तश्रेष्टि गुणवंत ॥ तेहनीकथाकहोसुणसंत ॥ १ ॥ सकल
द्वीपतणेराजान ॥ जंबूद्वीपनामेसुखषान ॥ मेरुसुदर्शनहेमध्यभाग ॥

तेतणी दक्षिणदिशि सुणीराग ॥ २ ॥ भरतक्षेत्र सोहै मनोहार ॥ पंचमलेछएक आर्यधार ॥ आर्यक्षेत्र माही मगधसुदेश ॥ सकलदेशतणो नरेश ॥ ३ ॥
ते देशमध्ये राजग्रही पुरी ॥ धनकणकंसणलक्षणभरी ॥ हरिवंसि श्रेणिक महाराज ॥ राजकरे तेधर्मजिहाज ॥ ४ ॥ ते तणीपटराणी गुणसार ॥ नाम चेलणा समकीतधार ॥ धर्मध्यान सवे सदाकाल ॥ जिनवरगुरुआज्ञा प्रतीपाल ॥ ५ ॥ एकसमे विपुलाचलगीरी ॥ समोवशरण आव्यो मनरलि ॥ महिमा देषी तववनपाल ॥ षटरितुना फलफूल आपार ॥ ६ ॥ करंडभरी हर्ष्यो मनमाही ॥ भेटधरी श्रेणीकन पाय ॥ करजोडीने करे वीनती ॥ विपुलाचल आव्या सनमती ॥ स्रुणी हर्ष पाम्यो नरराय ॥ माली कुदीधो सरपाव ॥ आनंदभेर वजडावी भूप ॥ वंदन चाल्यो तेगुणकुप ॥ ८ ॥ नंगरलोक अंतरपुरसाथ ॥ जई प्रणम्य श्रीजिनवरनाथ ॥ पूजि प्रणमी स्तोत्र

स्तुती गुरु मायु ॥ धर्मध्यान सेवे सुखदाय ॥ तेपुरमध्ये राजअवाद ॥ आतिउतंगमन करे आल्हाद ॥ १६ ॥ सिषरकलस डपकलहले ॥ ते सोभा देषन सुरमिले ॥ विमलवाहन नामे भूपाल ॥ राजकरे तिहागुणमाल ॥ १७ ॥ दाता भोक्ता विवेक विचार ॥ सूरवीर साहगुण माल ॥ श्रीजिनवरना सेवे पाय ॥ निजगुरु भक्ति करे मनलाय ॥ १८ ॥ प्रजातणी प्रतिपालन करै ॥ न्यायमार्गनीतिमनधरे ॥ नारिजन नोतेकालसरूप ॥ सकल गुणगण भर्यो कूप ॥ १९ ॥ नृपपटराणी विमला नाम ॥ रूपवंत सुंदर गुणधाम ॥ सतिसरोमणी सीलभंडार ॥ पतिव्रताव्रत पाले सार ॥ २० ॥ इंद्र इंद्रायणि सामने दोय ॥ परस्पर प्रीती आती घणी होय ॥ नगरलोक सवदेवसमान ॥ रूपवंत धर्मगुणषाण ॥ २१ ॥ पुरजनकी वणी तासकी समी ॥ सीलभूषण सोभे जीमर

उधार ॥ नरकोछेवेडोलिणीवार ॥ ९ दिव्यध्वनीवांणीसुणीसार ॥ स्वर्गमोक्षतणा दातार ॥ पुनः ॥ करजोडीपुछेराय ॥ हर्षधरीप्रणमी जिनपाय ॥ १० ॥ चारदत्तश्रेणीनेकथा ॥ तेभाषो जिनवरजुइथा ॥ तव जिनवरभाषेमनुहार ॥ सावधानथईसुणोनृपसार ॥ ११ ॥ एहीभरतक्षेत्रमकर ॥ आंगदेशचंपापुरीसार ॥ गढमंठमंदिरपोलपकार ॥ वनउपवनसोहेमनुहार ॥ १२ ॥ योजनद्वादशलक्षीकही ॥ नवजोजनविस्तारसही देवपुरीसमसोभेतेह धनकणकंचनभरीएह ॥ भुगलीर जिनवरनाधाम ॥ शिषरबंधसोभेअभिराम ॥ भवजीवपूजेत्रिकाल ॥ अष्टद्रव्यलेईकंचनथाल ॥ १४ ॥ अतिधवलपुरवासीगेह ॥ उञ्चलसातपंचखंडतेह ॥ पंक्तिबंधहेहटबज्यार ॥ वणिकपुत्रकरेसाव्यापार ॥ १५ ॥ सर्वलोक

दुहो ॥ देवदत्तासुतकारणे ॥ आरतकरेरेआपार ॥ पुत्रविनासुखकिमहोये ॥ किमरहेवंसविस्तार ॥ दु० १ कुलदीपकजोपुत्रहोय ॥ तोरहेम्हारीलाज ॥ सर्वकुटंबदीसेघणो ॥ पुत्रविनाकोइनकाज ॥ दु० २ दिपकविनजिममंदिर ॥ चंद्रबिनाजिमरात ॥ ज्ञानविनाजिमसतगुरु ॥ कमलविनासरोवर ॥ दु० ३ जिवविनाजिमदेहहे ॥ भूपविनाजिमराज ॥ शीलबिनाजिमकामिनि ॥ कंतविनसेजसाज ॥ दु० ४ ॥ दयाविनाजिमधर्महे ॥ न्यायविनाजिमभूप ॥ पुत्रविनाजिमकुलसोहे ॥ एदीसेसर्वविरूप ॥ दु० ५ ॥ निशिदिनजूरेकामिनी ॥ करेमिथ्यातअपार ॥ जानाजोसीपंडित ॥ पंडित ॥ पूछेआनेकविचार ॥ दु० ६ ॥ कोइकहेरूद्रदेवनी ॥ पूजाकरोमनलाय ॥ कोइकहेभैरवसेवो ॥ कोइयहपूजवलाय ॥ दु० ७ ॥ चं

मी ।। जीनपूजे देइ मुनीनेदान ।। वृतआचारपाले गुणवान ।। २२ ।।
तेन गरे श्रेष्ठीएकवसे ।। जिनदत्तनाममनउलसे ।। छतीसकोडी
धन हे दीनार ।। देशदेशमै करे व्यापार ।। २३ ।। धीरवीरगंभीरउदार
।। पाले श्रावकनो आचार ।। समकितवंत जिनपुज्याकरे ।। निज
गुरुआज्ञाते सिरधारि ।। २४ ।। जिन दत्तातसनारीनाम ।। रूपसो
भाग्यसकलगुणधाम ।। पूर्वपुण्यतने संयोग ।। मनवांछितते भो
गभोग ।। २५ ।। दोहा ।। आपरूद्धि संख्यानही ।। धर्मतनेपरसा
द ।। कोइकपापउदे करी ।। पुत्रनहीधरमाय ।। १ ।। पुत्रविनारूरेघ
णे ।। बांधे आरतध्यान ।। पुत्रविनाएसंपदा ।। दुखदायकमहान ।। २ ।।
कुलमंडण नंदननहि ।। सकलरीधीभंडार ।। पुत्रविनाकुणभो
गवे ।। घरमंदिरमनोहर ।। ३ ।। चाल भुलमन भमरा तु कांइ भम्यो

पापबंधपूर्वतने ।। वलीकीजैपापउपाय ।। तोसुषसंपतीकिमपा
मीए ।। समझोमनमाय ।। दे० ।। १४ ।। इमकरतांदिन बहुगया ।। एक
दिनसुभसंजोग ।। सुमतिसागरमुनीआविया ।। टालवापापतोरो
ग ।। दे० ।। १५ ।। भावरीकरवाउतस्वा ।। आव्याजिनदत्तधाम ।। पड
गाव्यामुनीभावसु ।। करजोडी करेप्रणाम ।। दे० ।। १६ ।। नवधाभक्ति
करितदा ।। प्रासुषदीधोआहार ।। निरंतरभयोमुनीबालीया ।।
अषयदानवीचार ।। दे० ।। १७ ।। वैयाव्रतकरेश्रेष्ठिजी ।। पासेबेठीना
र ।। भोमहाराजसुणोबीनती ।। दयावंतअपार ।। दे० ।। १८ ।। कर्म
लगावेगटालवा ।। जुमछो वेद्य महान ।। पुत्रहोसेके नहि म्हारे ।।
तेकहो ज्ञाननिधान ।। दे० ।। १९ ।। गदरवेनतेबालती ।। नाषेआंसुधा

कोइकहे

श्रीगुरुदेवी [redacted]।। कोइक हे दयाविधिदान ।। कोई कहे यज्ञ रा कूस ।। भजो करी सनमान ।। दे० ८ ।। यंत्र मंत्र ओषध घणा कीधन ।। कीधा अनेक उपाय ।। तो पण सुतन हो संप जो ।। षरचो धन समुदाय ।। दे० ९ ।। मिथ्यातभाव कुदेवनी ।। सेव कीधी अनेक ।। कुगुरुने वाही घणा ।। काज न आव्यो एक ।। दे० १० ।। विषयी वे जी वतकारणे ।। तो किम ठरे काय ।। ऊषर भू वीजावा विये ।। तो किम फल होयताय ।। दे० ११ ।। अग्निमे कमल जो निपजै ।। अहिमुष निकले पीयूष ।। क्षुधातुर वेलू भषै ।। तो किम जायभूष दे० १२ ।। मिथ्यातव सेवे सकषविमल हे ।। किमल हे पुत्रपरवार ।। मलीन वस्त्र का दवधोइए ।। तो कीम उजल कार दे० १३ ।।

श्रीनेपरउपगार धर्मध्यान ।। रत्नप्रासदेषी निर्मली ।। सलहलते सुवीसाल ।। २ ।। नेरल पछे रजभर्यां ।। देष्पा देशामलीन ।। मेलरहित पछे निर्मली ।। ते मणी देषी प्रवीन ।। ३ ।। प्रात उठी जागी तवे ।। सामायक करी नारि ।। निज पति पासे जाय के ।। पूछे सुभ वीचार ।। ४ ।। श्रेष्ठी कहे सु पि सुंदरी ।। सुभ फल दायक जान ।। सुणी हर्ष पामी घणे ।। वणि तो गई निज साथान ।। ५ ।। सुनीच र भाषे भूपने ऐदेसी ।। सुभ जिव कोइक स्वर्गथी ।। आवतनिये तिणी वार ।। देवदता गर्भे धरो ।। हर्षे वदन भई नारे रे ।। १ ।। मन नो मनोरथ म सफल ।। हो से पुत्र विसाल रे ।। डोहलो उपजे सुंदरी ।। पूजो जिनत्रण काल रे ।। म० २ ।। दिन प्रति दान पूजा

र ॥ तवमुनीकहेसुनासाभलो ॥ हा सेपुत्रउदार ॥ दे० ॥ २० ॥ सम
कितधरो सुता निर्मलो ॥ टालो सकल मिथ्यात ॥ श्रीजीनधर्म
नेपालजो ॥ द्वादशव्रतधर्मोष्यात ॥ दे० ॥ २३ ॥ धर्मथी सर्वसंपजे ॥
धर्मथी राजभंडार ॥ स्वर्गमुक्ति लहे धर्मथी ॥ धर्मथी सुतपरवार
॥ दे० ॥ २२ ॥ इंद्रचंद्र धरेंद्र पद ॥ हलहरिपदसार ॥ चक्रवर्तिपद ध
र्मथी ॥ धर्मकामकुमार ॥ दे० ॥ २४ ॥ दुर्लभयस्तजेजेवि ॥ ते मिलेध
र्मपसाव ॥ एवी सुणीगुस देशनो ॥ हर्षी स्त्री मनमांय ॥ दे० ॥ २५ ॥
सेर सेठाणी देयमिलके ॥ नम्या दोइकर जोड ॥ समकीतल
येनिश्चयकरी ॥ मिथ्यात नीनतजोषोड ॥ दे० ॥ २५ ॥ दोहा ॥ यति
गया वनध्यानधरि ॥ करि नेपरउपगार ॥ धर्मध्यान सेवे स
दा ॥ भावे स्त्री भरतार ॥ १ ॥ एक समेपुण्यउदे ॥ देषो स्वपन

ये गोठवी ॥ ज्याजायतिहार हे साथ ॥ हासविनो दकरे घणा ॥ तुठा लसजु गनाथ्ये
॥ म० ३२ ॥ एकदीनवनमेगया ॥ क्रीडाकरवासार ॥ पुरवा दिवन एक है ॥ तिहा
हिर गिरीनाम धाररे ॥ म० ३३ ॥ यमधर नामे मुनि तेगिरि परे ॥ मुक्तिगया भवतार
सिद्धक्षेत्र जेजानजो ॥ भव्यजीनआधाररे ॥ म० ३४ ॥ महासुदी पंचमी दीन ॥ तिहा
जात्राभयसाररे ॥ तेगिरीजात्राकारणे ॥ श्रावक मिलिया अपार रे ॥ म० ३५ ॥ यात्रा
करवा संचारा भव्यजीवसमुदायरे ॥ चारुदत तिहां तव गयो ॥ पूजा करि सुषदा
यरे ॥ म० ३६ ॥ पूजी प्रणमी पाछा फरया ॥ आव्या विपनमझाररे ॥ मित्र सहित हे
इजना ॥ कौतक करतासाररे ॥ म० ३७ ॥ एक विद्याधर रूवडो ॥ षीलो दीठो
तिणीवाररे ॥ वस्त्र आभूषण मंडित ॥ चंचलदष्टि आपाररे ॥ म० ३८ ॥ चेतन
ता नहीदेहमे ॥ निरजीव जिमसुतो तेहरे ॥ विसमेर पाम्या ते समे ॥ कोनको
तकए हरे ॥ म० ३९ ॥ धीरविर निसंत ॥ थयो तब चारुदतरे ॥ समरे णमोकार
भावथी ॥ संकातजीसुभवीतरे ॥ म० २० ॥ ते हुनो खड्ग लेइ करी ॥ जेरी काका

करो ॥ ए बोल्लो लोउपनो सार ॥ श्रेष्ठि वसावे ते पुरीयो । रूभ जीव हेग
मकारे रे ॥ म० ३ ॥ धर्म करतां दिन गया ॥ पूरा थया नव मासरे ॥ रूभ न क्षत्र
भयो गमे ॥ जन्म भयो ते ज रास रे ॥ म० ४ ॥ जनम मो बवनव करो ॥ मोति चोक पु
राय ॥ तलीय तोरण बांधिया ॥ कामिनी मंगल गायरे ॥ म० ५ ॥ जिन मंदिर उछव
करो ॥ महाभिषक विसाल ॥ आष्ट द्रव्य पूजा करी ॥ हर्षी बाल गोपाल रे ॥ म०
स्नेह सजन संतोषीया ॥ दीधो जाचक ने बहु दान ॥ चारु दत्त नाम दीया ॥ हर्षो श्रे
ष्ठी रूभ जानरे ॥ म० ७ ॥ जिम निर्धन धन पामीने ॥ उलट आंगन माय ॥ बीज
चंद्र सम वाधतो ॥ रूपवंत सुषदायरे ॥ म० ८ ॥ रमावे धव खवावे मावडी ॥ पहेरा
वे सोल श्रृंगार ॥ सात वृष नो जव थयो ॥ तव विद्या भणावे साररे ॥ म० ९
सकल विद्या भणी नीमीली ॥ बोहोत्तर कला परवीन रे ॥ पूरव भव सास्त्र
दीयो ॥ ते फल थोडी दीन रे ॥ म० १० ॥ श्रावक ना व्रत पालतो ॥ मंत्र जपे न
कार ॥ जगमे जस बहु व्यापीयो ॥ पुण्य उदे मनोहार रे ॥ म० ११ ॥ मंत्री स

धूमकेतु विद्याधर राई ॥ सुखवल्लभ मित्र छे भाई ॥ इम रेण मसार प्रीती अपार ॥
एक एक ना जीव आधार ॥ ३ ॥ रूप का मिनी रूप वलाली ॥ देषी मोह पाम
तत काली ॥ तेतनो भोग वांछे ते गमारे ॥ रचे कूड पाषंड अपार ॥ ४ ॥ ते हने
कूडन हि मे जानो ॥ ते भूलो पाप निधानो ॥ आकुल व्याकुल अति घणो
होइ ॥ नारी योग मीले नहि कोई ॥ ३ ॥ सुख भीति राषे मन माही ॥ वस्तु पे राष
यथ रलाई ॥ कूड स्नेह धरे सुख साथे ॥ रूथ कामीनी करवा हाथे ॥ ४ ॥ इ हा
आव्या दोई मित्रो ॥ क्रीडा करवा चार पधीयो ॥ विद्या बल देषीलो रूप आ
च्यो ॥ सुख वणीता हरि गयो तद्यो ॥ ५ ॥ तुम आव्या धर्म सषाई ॥ सुख ने तुम
बंध छुडाई ॥ धन्य धन्य तुम पुण्यवंतो ॥ नहीं लही ये तुम गण अंतो ॥ ६ ॥
का उपमा कहो तुम भाई ॥ उपगुण रन भूलो न ही पिता ध्याई ॥ अब जा
सु ● सु निज गामो ॥ दिपुं तेहीं उगुउ बुबामो ॥ ७ ॥ यम परस्पर करी विसे वा

डीतीन॥ एकफोडीगुटीकातवे॥ चेतन्य भयोप्रबीनरे॥ म०२३॥ साम...
वेटगमग॥ पणबोलेनहीस्वगरायरे॥ बीजीफोडीगुटीकाभली॥ त...
वेरोथवरकायरे॥ मू०२४॥ तीजीगुटीकाफोडीतदा॥ निरोगथयोसरी...
तवखेचरतिहांबोलीयो॥ धीन्यतुसासवीररे॥ म०२२॥ परउपगारीत...
भलो॥ ते दीधोजीवतदानरे॥ सं तपुरषपुण्यवानहे॥ तुछेचतुरस...
जानरे॥ म०२४॥ जिनदत्तकतनुयपूछीयो॥ तमोकोनसोगुणवानरे॥ के...
नकारणइहांआवीया॥ तेकहिजोजथारथवानरे॥ म०२५॥ दोहा॥ जय...
चरकहेसांभलो म्हारो सकलव्रतांत॥ विजयारथगिरीभरा तनो॥ स्वेतव...
रणा हेसं॥ ३॥ तेतणीदक्षणश्रेणीमे॥ शिवमंदिरपुरग्राम॥ महेंद्र वि...
मनामखग॥ राजकरेगुणवान॥ २॥ महाप्रतापीभूपती॥ तेतणेांहुपुत्र...
अमितगतीमुजनामहे॥ राधेाधरनोसूत॥ २॥ मुसवणीनारूपेरती...
कुमारीकातसनाम॥ चंपकवणीगोरडी॥ सकलेगुणेआराम॥ ४॥

...ायनोसंगी विषेलेसनानहीलसंजयो १९ कामश्रेलाकरेबहुनारी स्वे...
...वणबासोलेश्रंगारी करेकामकेलुहलभारी हावभावदेष्यावेप्यारी १७ नी...
...नृत्यकरेबहुष्यालो निजहृदिसा सवालो तोपणसमद्रैनहीतेलेसो ई...
...ो विषयनउपजेलेशो १८ नारीसन्मुषनहीलेजोवो तणतामनषेदहोवे-
...कबासरगईमित्रसेना निजपीहरगईजनेता १९ पुत्रेमातपुत्रीनेकाडे-
...षदुखनीवातकहेआडे पुत्रीकहेसांभलमाता षानपानसचैसकषदाता-
...ण कतनसामोजोवो एहदुषवडोमुसहेवे मायपुत्रीतनीसुणीवात
...नमाहीधमीरहीगात २३ हवेकरसोएनोउपाय आवसरजोई २२
...मनंदनरूपवीसालो महाधमीपुडभंडारो पणवणीताउपरमहीमोह-
...ोणकारणजानाकहे २४ पुरुषारथनहीतनुमाईकाम रषसमझेन
...ाइ देवदलास्फणीलसवातो चहुसंताकरेनिजगातो २९ दोहा सिद्धा
...या निजघरगई देवज्याकरोविचार रामनहीस्त्रीउपरे लोकिमहोयवि

णेस्नेह घरोदोडेआलो सिष मागाविछार राई निजगामगयो सुर्षाइ ८ निजसे
कशीलैयागे चडेकोधरातीनीवारो अरिसाथेयुद्ध करोभारी दीपुज्याति दुर्अङ्गी
नयया मिनिजघर आपो सुषभोगवे विद्याधरी रायो चारुदत्त आव्यो निजधामे
धर्मध्यान करै अभिरामो १० लिहाश्रे श्री सिद्धारथनामो धनवंतवसेलै
मा सिद्धारथनामेहेनारी तेतोरूपसैभाग्यभंडारी ११ तेणेजन्मापुत्रीवीव्हा
लो मित्रसेनाअतिसुकमालो तेनारूपननोनथिपारो रतिराणीसामानिरध
रो १२ चारुदत्तपरणेतवालो महामोहोछवकरीततकालो धवलमंगलगोर
गावै मोततातततनेमनभावै १३ कन्यापरणीनिजघरिआई युगतिजोडीमीलि
मीभाई स्त्रीउपरनथितसरागो भोगसमर्श्रे वडभागो १४ मातदीनवरै धर्म
ध्यानो जिनपूजाकरै मुनीदानो शास्त्रअभ्यासकरैसदाकालो सतसंगतिग
मेसुकमालो १५ रागरंगगमेनहीनास काम-चेष्टाकुतुहलहास रत्चेनही

र्मध्यानकरैज्यालगैरे शास्त्रतनोअभ्यास देवगुरुउलखज्यालगेरे शुभ
रगप्रतिभास २ भा तपजपसंजमत्यलगेरे सजनसगाईहोय मानतातप
ालगैरे वलबुद्धिचउलोय भा० ४ ज्यालगेस्त्रीनेनबाणमारे देहनलागोघा
लगेसदुवल्लभहोयरे स्त्रीदेईसर्वभुलय ५ नारीरसभेदजवलहेरे तवतज
सर्वविचार पठनपाठभुलेसेवेरे वनेमोहअपार भ ६ मुससंगतियाएको
नुमकहोमनलाय लोचोरदिनामेएहनेरे सर्वभेदकेसमझाय भ ७ देवरवच
णीतवेरे हर्षघणोमनमाय थारिमनजरमेजेआवेरे तेकरजोराहउपाय भ
लाईभाभीतणीरे कपटतनोभंडार उपायमाडोतेहनेसमेर दुर्बुद्धिगमा
कनोदुर्जनमानविरे वलीकेवतपामीलेन जिमफ्फकेरसमापाईरे कानक
नार्थापात भ १० तेनरवेस्यावसेरे वसंतमालातसनाम कडकपटजो
तिघणोरे विषविलछ्रीयाम भ ११ वसंतनिलातसनदनीरे रूपतनोअ
ार जानेकंचुतलीरे मोह्याराजकुमार भ १२ मृगनयनीकटनस्थनीरे

ार ३ ए जाकारीवातईह किमकरीबातकेवाये ओपुरुषजोसामले
किमसोयविस्तार जगमेहासीथाय २ मातपुत्रनेकिमकहै कहेविनसरे
काम दुर्जनजनकईसांभले तोजाये घरनामाम २ देवदत्तमनदुषधरे
ते आनवडुपाय पडतमु स्वंएपुत्रहै तेकिरीसमझाय ४ रुद्रदत्तमुस
पंरूपापतनोभंडार सातव्यसनवरुकेलवे तेपाईसंसार ५ तेआग
कहोवारना तेकरसेउपचार मोहमायामेमाडसे एमननिश्चयधार
द्रदत्तबुलावीयो तेहनेकहोसर्वभेद सांभलीदेवरबोलिय माकयोम
मेषद ७ ॥ जेहनेजेएनोरगतेहनेनगमेबीजो सांगएदेसी ॥ निसवीनधर्ममें
ानदरे करैवद्दमुनिवरसंग पडनकरैघणोरे नाराडपरनहिरंग भाभी
ाकरसोएहुउपापजोमरे आवसेहाय १ तुमसुतधरमिआतिघणा
ाडानेसंसारवात नारीस्वचाषानडिरे यालगैकरैगणसाथ २

पवाजोहोरेरे जोइमेमोमलेपरसंग क्षणएकधीरजतजीरे होजायविकहीअं
मारवणीकतणोरे रूपालोजोवनवंत हमघरजोतुमलावसोरे तोपाडोमोहमें
भा २५ दोहा वेश्यावचनस्रणीकरि रुद्रदत्ततणीवार उठीकरआयो
रमे रसतेकुडगमार १ मावतपासेजाईने कहेसर्वेवृतांत गजछोडजोम
स्वो कालरूपदीसंत २ प्रपंचरच्यातवअतिघणा कुमरकनेतेजाय हर्षि
नकरवालीयो साभलजेतुभाय ३ तुसीवयाकोनंदनोरे लालएदेसी
ोवरचनविषेरेलाल ज्ञानतनाभंडार मनमोहोरे चालोतेमुनीवीदवारेलाल
ीकुमरअपार म १ आवद्द्यालेईकरीलाल-मुनीपूजनकेकाज म बेहुजनमा
ाचरोरेलाल सरजसभावीसाजे म २ बजारमध्यतवआवीयारेलाल सां
ालीमसार म हाथीआव्योतवआवतोरेलाल बंधनतोडीतेवार म ३ संडादं
ोरेलाल दीसंतोविकरालल म आसपाडरोनगरीनीघेरेलाल जानेरुठोका
४ कोइहोडेकेईभूपाडेरेलाल केईकरेपुकार म मातलातकेईसांभलेरे

च

चंपकवनिवास मधुरस्वरीअतिकोमलारे लहुवडीसुकुमाल भा ३२
वडावडाभूपतिलारमारे धीरवीरगंभीर तेहनोरूपदेषीकरीरे विकलहोयशरीर
एकदीनाओएहवीरे अंबरबेटपास लोकवेभूलेधर्मनेरे होणमेपडे मोहपास
देवरवचनसुणीनवोरे हवीतवेनेगार सीघ्रकरोएकामनेरे मुझसुनाभोगसंसा
र भा ३९ भाभीवचनथीचंचवोरे आव्योवेश्यागेह आदरदीयोतेहने आति
घणोरे धरतीआणीघणोनेह भा ३० वातसुणोएकसुंदरीरे सुलभतीजोएक चारुद
त्तसनामहेरे स्त्रीजेनसमजेवीवेक भा ३८ भोगसंजोगसंसारनोरे लेसनाद्यामझेविचा
र जोतुमहीनेसीषवोरे नाषोमोहमझार भा ३९ साचीचतुराईतुमतनीरे तोजानी
सुसाजजेमागोतेआपसुरे जोसबसेहमकाज भा २० रुद्रदत्तवेणसाभलीरे वे
श्याइसीतेवीर कोनकठिनकामतुमदीयोरे एहनोसुछैभार भा २१ पंचाग्नितपता
पलारे बहुकरेकायक्लेश भस्मचोलीनग्नफिरेरे धरतानवानवावेश भा २२
ओंधेमाथतेझूलनारे धरताउरधरध्यान संध्याजपनबहुकेरे भणतावेदपुर

रात्रीभोजननाकरोरेलाल अभक्षनकरोआहार म जीवदयापालोनीर्मलीरेला
ल मंत्रगणोनमोकार म १४ वेणालेईकरीहाथमेरेलालगावेसरसअपार म
पंचकल्यानकजिनतणारेलाल मधुरस्वरउच्चार म १५ हावभावकरैअतिघ
णारेलाल नृत्यकरेमनोहर म चेष्टाकरेकामउपजावेरेलाल सपुन्यवदनअ
पार म १६ चारुदत्ततहर्षीयोरेलाल चतुराईदेषीनससार म साधर्मीवणी
तामलीरेलाल रुडोयेनोआचार म १७ विनयबाचल्याकरेअतिघणारेलाल
तिमरमोहेकुमार म चरचाकरेजिनवरतणीरेलाल शास्वतनाविचार म
कथागोष्ठीकरेरुवडीरेलाल बेठापासोपास म चिंतदेईनेसाभलेरेलाल म
नडोहायेउल्लासम १८ दोह चारुदत्तनेतसमै लागीतृषाअपार निर्मलजल
मंगावजोसीतलसुंदरनार ३ कुमरवचनसुणीकामीनी बोलीमधुरीबान
जललाउहुनिर्मलो सीतलसतुरसुजाण २ नीरलाउतावलो वेश्याउठी

ळ केईकरे हाहाकार म ५ क्रोधो झांतगजनीकलोरेलाल चारुदतसनमुषते हम
भयपाम्यादोड्जनारेलाल थरथरधुजेदेह म ६ गाठालबलेदोईजनारेलाल
व्यावेश्याआवास म कईनसरणदेषतारेलाल मनमेथयानिरास म ७ वेश्या
हमेपेठीयारेलाल ककोभतिजोदेई म वेश्यायेआदर करोरेलाल भलेभा
बुधलोय म ८ सिंघासनदीयोबेसवारेलाल सनमानकीयोअपार म मध
चनबालीकामीनीरेलाल हर्षवदनभईनार म ९ चित्रविचित्र घररूवडारेला
धवलमंदिरउतंग म सप्तषणआवासहेरेलाल चित्रामसुंदररंग म १० चा
दत पुत्रेनारीनेरेलाल तुम कोनकुलअवतार म चतुराईदीसैतुमघरेला
वणिताबालीततकाल म ११ श्रावककुलहे हम तनोरेलाल पालोश्रावकाचार
जिनवरपूजोभावधारेलाल स्रुभद्रव्यअष्टप्रकार म १२ निग्रंथगुरुपदसेवेना
लल देउसुपात्रदान म जिनवाणीभणोभावथीरेलाल जनगजलनहिस्नान म १३

मसुरीयारे मलियासंधेसंध मो ४ चोवाचंदनआरगजारे मर्दनकर्ता
र मो हीरचीरपितांबररे परकुलनयानयाचिर मो ५ सोलश्रृंगारजेभ
रे रत्नजडीतमनोहर मो एकरूपनेनिर्वतारे हर्षसनोनहीपार मो ६
चसालीकबहुब्रेरे कबहहिसोलाषाट मो कबहु सीघासन बेठतारे
बुहुछपरपार मो ७ मेवामिठाईलाडवारे भरीयामधकरसवास मो षट
भोजनभोगतारे धरतामनअहलाद मो ८ लवंगचोपारीइलचीरे मं
मोलनायान मो बिडाच्यावेअतिघणारे विनोदकरेसुजान मो ९ हावभा
करेकामनीरे नयणबाणपरिहार मो नाटकरैविसनीरे माहलनोधंकार
ी १० वीणाबजावेस्वरीरे गावेगीतरसाल मो फुंदडीदेवे घमकतीरे
सिहसिदेवेताल मो ११ घमघमवाजेघुघरीरे बिंछीयानाठमकार
। ठमकपायजोजररे गोफणीयेघमकार मो १२ तताथेईबोलतीरे

ततकाल सीतलजलभरोपात्रमै उजलपात्र विशाल २ मनिमोहनघो
नीरमे वेश्याआवसरपाय लावीजलतवस्करो दीधोसुतकमाय ४ पीवतनि
रकुमारनी भ्रमभतिगईततकाल सकलअंगविकलभयो भयोधर्मवि
शाल ५ देवगुरुभुल्योसवै भुल्योसाखअभ्यास जेषतपव्रतभुल्योसवे
सानसुद्धगईनाश ६ मातनातभुल्योसवै भुल्योसबपरिवार वेश्याउप
कुमरने उपज्योमोहअपार ७ टालकुमणगुमणछुमणोरे छुमिरझेसारि
त मोतीनाछुमषाएदेशी वेश्यारूपदेषीकरीरे भगयोकामसरीर भोग
जोगनेभोगतोरे अतिघणातेवलवीर मो ध्रु० १ नारीप्रीतकरेघणीरे चंदे
पक बांधेसार मो मणिमयतोरणबांधेयारे लटकतामोतीहार मो २ के
रचंदनछांटनांरे वीजनेढोलेवाय मो कोमलसेजरचैभलीरे फूलभरी
सुषदाय मो ३ मषमलतलाईपाथरीरे रेसमडोरीनाबंध मो उसीषा

गीतशब्दउचार मो देहमरोडेमषमोडलीरे करत्यालाकरेनार मो १३
गार आलापतीरे गावतीरसभरयागीत मो प्रीतमजीसेकामीनीरे क
अतिघणीप्रीत मो १४ हास्यकुतुलष्यालथीरे वसकस्योचारकुमार
धनषाधोसवधलीनेरे काईनजानोविचार मो १५ केबहुजलक्रीडा
रेरे परस्परछांटेनीर मो केबहुवनवाडीरमेरे लाजरहीतणरवीर-
१६ केबहुरमताजूगटारे सोगटपासाषालमो विविधक्रीडाक
हर्षेथीरे कामचेष्टाकरेवाल मो १७ धनमंगावेघरथकीरे मोक
लातनेमात मो दुर्णापरे षट्वर्षलगेरे भोगव्याभोगविष्यात मो १८
नधृतिलीयोलंजीकारे सोलकोडीदिनार मो तेडबामोकलेतात
रे अयघरआव्योकुमार मो १९ तातमाततमदूषधरेरे दुषकरेबु
तनीनारि मो लोकसवेहासीकरेरे लाजेसवपरवार मो २० मात
तनारीतणीरे म्हारेनहीकाईकाम मो मनगमसेतवआवसुंरे तुम्हारे

तुम्हारे गाम मो २३

सोमो ढूंगगे यम हंसराज ॥ कुट पुजी कललढु सुजा
कोड लाव लाष त्तगवां न ॥१८॥ श्री सीतल प्रभु मुक्ति
ढूंगये ॥ कोडाकोडी अगरें कहे ॥ सोवीधुन वर कुट
हिन्नये ॥ आगे कर्म काटि शीव गये ॥१९॥ कोड बी
आलीस लाष बतीस ॥ बीयालीस हजार जतीस ॥
नवसे पांच अधी कोहास ॥ तारहणा नफल कोडी
उपवास ॥२०॥ सं कुलीतें श्री यांस जीनेस ॥ मुक्तिगये
मुनीजनगणनेष ॥ क्षी … वीधी जीते
॥ छीनवें कोड लाष … ढान वेंस